राष्ट्रीय सहारा

कानपुर दिनांक 13/03/2022 पेज न.07

राई-सरसों में सल्फर तत्व डालना जरूरी

सीएसए में प्रशिक्षणार्थी प्रसार कर्मियों को कराया गया राई सरसों के शोध परिक्षेत्र का भ्रमण।

सीएसए में राई सरसों पर कृषि प्रसार कर्मियों के प्रशिक्षण के समापन पर वितरित किये प्रमाणपत्र

कानपुर (एसएनबी)। सीएसए में राई-सरसों के विकास पर आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला के दूसरे व अंतिम दिन शनिवार को प्रशिक्षणार्थियों को प्रक्षेत्र का भ्रमण कराया व्यवहारिक ज्ञान कराया गया। विवि के पादप रोग एवं प्रजनन विभागाध्यक्ष एवं निदेशक शोध डॉ.करम हुसैन ने राई सरसों के अधिक उत्पादन के लिए पादप पोषण तत्व के प्रवंधन पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि राई सरसों में सल्फर तत्व अत्यंत आवश्यक है। इसकी पूर्ति हेतु सल्फर तत्व राई सरसों फसल में डालना नितांत आवश्यक है।

पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं अधिष्ठाता गृह विज्ञान डॉ.वेदरत्न तिवारी ने राई सरसों की फसल को नुकसान पहुंचाने वाले अल्टरनेरिया झुलसा तथा तना सड़न रोग आदि वीमारियों की रोकथाम के लिए नवीनतम तकनीक की जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को दी व जैविक रोग प्रवंधन पर जोर दिया। जीव रसायन विज्ञान विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ.नंद कुमार ने राई-सरसों के उपभोग के महत्व की चर्चा करते हुए कहा कि सरसों का तेल हृदय रोगियों के लिए लाभकारी सिद्ध हुआ है। कार्यक्रम संयोजक डॉ.महक सिंह ने नवीनतम प्रजातियों का ज्ञान कराया।

प्रशिक्षणार्थियों को विवि के तिलहन शोध परिक्षेत्र का भ्रमण डॉ.वीके सिंह व डॉ.राजवीर सिंह की अगुवाई में कराया गया। उन्हें वहां लगी राई सरसों के विभिन्न परीक्षणों की जानकारी दी गई। विवि कुलपति डॉ.डीआर सिंह ने सभी को राई सरसों की नवीनतम तकनीकी एवं विवि द्वारा विकसित राई सरसों की प्रजातियों को किसानों तक पहुंचाने के लिए प्रोत्साहित किया। अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ.धर्मराज सिंह ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाणपत्र वितरित किये।

दैनिक जागरण कानपुर 13/03/2022

सरसों का तेल हृदय रोगियों के लिए लाभदायक

जासं, कानपुर : सीएसए विवि और राई-सरसों अनुसंधान संस्थान भरतपुर के संयुक्त तत्वाधान में प्रसार कार्यकर्ताओं के लिए आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शनिवार को समापन हुआ। विवि के पादप विभाग के अध्यक्ष व निदेशक शोध डा. करम हुसैन ने पादप पोषक तत्व प्रबंधन की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि सरसों में सल्फर तत्व जरूरी है। जीव रसायन विज्ञान विभाग के सहायक प्रोफेसर डा. नंदकुमार ने बताया कि सरसों का तेल हृदय रोगियों के लिए बेहद लाभकारी है। कुलपति डा. डीआर सिंह, डा. वेद रतन तिवारी, डा. महक सिंह रहे।

राई सरसों के प्रशिक्षण समापन पर, प्रशिक्षणार्थियों को बांटे गये प्रमाणपत्र

कानपुर। सीएसए एवं राई सरसों अनुसंधान संस्थान भरतपुर(राजस्थान) के संयुक्त तत्वाधान में प्रसार निदेशालय के सभागार में प्रसार कार्यकर्ताओं के दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे दिन एवं समापन अवसर पर शनिवार को विश्वविद्यालय के पादप कार्यिकीय विभाग के विभागाध्यक्ष एवं निदेशक शोध डॉ करम हुसैन ने राई सरसों के अधिक उत्पादन हेतु पादप पोषक तत्व प्रबंधन पर बल दिया। उन्होंने कहा कि सरसों में सल्फर तत्व अत्यंत आवश्यक है। इसकी पूर्ति हेतु सल्फर तत्व राई फसल में डालना नितांत आवश्यक है। इसके साथ ही पादप रोग विज्ञान के प्रोफेसर एवं अधिष्ठता गृह विज्ञान डॉ. वेद रत्न तिवारी ने अपने व्याख्यान में राई सरसों की फसल को नुकसान पहुंचाने वाले अल्टरनेरिया झुलसा तथा तना सड़न रोग इत्यादि बीमारियों की रोकथाम के लिए नवीनतम तकनीकों की जानकारी प्रसार कार्यकर्ताओं को दी। साथ ही जैविक रोग प्रबंधन पर अधिक बल दिया। इसके साथ ही जैव रसायन विज्ञान विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ नंदकुमार ने राई सरसों के तेल के मुख्य महत्व एवं उसकी गुणवत्ता और

उपयोग तथा लाभ के बारे में जानकारी दी। साथ ही साथ उन्होंने बताया कि सरसों का तेल हृदय रोगियों के लिए लाभकारी सिद्ध हुआ है। इस अवसर पर कार्यक्रम संयोजक डॉ महक सिंह ने राई सरसों की विश्वविद्यालय द्वारा विकसित नवीनतम प्रजातियों के बारे में प्रसार कार्यकर्ताओं को विस्तृत से जानकारी दी। डॉ वीके सिंह एवं डॉ राजवीर सिंह ने प्रतिभाग कर रहे सभी प्रसार कार्यकर्ताओं को विश्वविद्यालय के तिलहन शोध प्रक्षेत्र पर भ्रमण कराया। तथा वहां पर लगी राई सरसों के विभिन्न परीक्षणों की जानकारी दी। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह ने सभी प्रसार कार्यकर्ताओं से अनुरोध किया है कि वे राई सरसों की नवीनतम तकनीकी एवं विश्वविद्यालय द्वारा विकसित राई सरसों की प्रजातियों को किसानों तक इस दो दिवसीय प्रशिक्षण के माध्यम से अवश्य पहुंचाएं। जिससे किसानों की आय दोगुनी करने और कृषक आत्मनिर्भर बन सकें। अंत में अधिष्ठता कृषि संकाय डॉक्टर धर्मराज सिंह ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए।

हिंदुस्तान कानपुर 13/03/2022

प्रशिक्षण: कृषि से जुड़ी जानकारी दी

कानपुर। सीएसए कानपुर व राई सरसों अनुसंधान संस्थान भरतपुर (राजस्थान) के संयुक्त तत्वावधान में प्रसार निदेशालय के सभागार में प्रसार कार्यकर्ताओं के दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शनिवार को समापन हुआ। निदेशक शोध डॉ. करम हुसैन ने कहा कि सरसों में सल्फर तत्व अत्यंत आवश्यक है। पूर्ति के लिए सल्फर तत्व राई फसल में डालना जरूरी है। पादप रोग विज्ञान के प्रोफेसर डॉ. वेद रतन तिवारी ने अल्टरनेरिया झुलसा व तना सड़न रोग इत्यादि बीमारियों की रोकथाम को नवीनतम तकनीकों की जानकारी दी। कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह ने सभी प्रसार कार्यकर्ताओं से राई सरसों की नवीनतम तकनीक व विवि में विकसित राई सरसों की प्रजातियों को किसानों तक पहुंचाने पर जोर दिया।

आज

जैविक खेती से भूमि की उर्वरक क्षमता में वृद्धि, बढ़ेगी फसल की पैदावार

कानपुर, 12 मार्च। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय की ओर से 13 जिलों के केवीके (कृषि विज्ञान केंद्र) में प्राकृतिक खेती का मॉडल तैयार करेगा। कृषि वैज्ञानिक किसानों को प्राकृतिक खेती के फायदे के बारे में जानकारियां देंगे। खेती में प्रकृति से प्राप्त संसाधनों के प्रयोग के साथ ही जैविक खेती पर जोर दिया जायेगा। इसके साथ ही किसानों को बीजों का उत्पादन के बारे में जानकारियां दी जायेगी। सीएसए के प्रसार निदेशालय के प्रभारी डॉ. एके सिंह का कहना है कि सभी कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) के एक एकड़ भाग में कृषि मॉडल के रूप में विकसित करेंगे। खेती में बीजामृत से बीज शोधन, घनामृत से बुवाई से पहले जमीन का शोधन, नीमास्त्र से कीड़ों की रोक, फंगस को रोकने के लिए खड़ी फसल में जीवामृत का छिड़काव होगा। खाद के रुप में वर्मी कंपोस्ट का प्रयोग किया जाएगा। यह सभी चीजे प्रकृति से प्राप्त और गौवंश से प्राप्त संसाधनों से तैयार की जाती है।

आज

कानपुर दिनांक 13/03/2022

प्रशिक्षणार्थियों को कराया प्रक्षेत्र का भ्रमण, जानकारियां दीं

राई सरसों के दो दिवसीय प्रशिक्षण का हुआ समापन

कानपुर, 12 मार्च। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय एवं राई सरसों अनुसंधान संस्थान भरतपुर (राजस्थान) के संयुक्त तत्वावधान में प्रसार निदेशालय के सभागार में आयोजित प्रसार कार्यकर्ताओं के दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन हुआ। सीएसए के कुलपति डॉ डी.आर. सिंह ने कहाकि राई सरसों की नवीनतम तकनीकी एवं विश्वविद्यालय द्वारा विकसित राई सरसों की प्रजातियों को किसानों तक जरूर पहुंचायें, ताकि किसानों की आय दोगुनी कर कृषक भाई आत्मनिर्भर बन सकें। अंत में सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए। आज विश्वविद्यालय के पादप कार्यिकीय विभाग के विभागाध्यक्ष एवं निदेशक शोध डॉ करम हुसैन ने राई सरसों के अधिक उत्पादन के लिए पादप पोषक तत्व प्रबंधन पर बल दिया। उन्होंने कहा कि सरसों में सल्फर तत्व अत्यंत आवश्यक है। इसकी पूर्ति हेतु सल्फर तत्व राई फसल में डालना नितांत आवश्यक है। अधिष्ठाता गृह विज्ञान डॉ वेद रतन ने कहाकि राई सरसों की फसल को नुकसान पहुंचाने वाले अल्टरनेरिया झुलसा तथा तना सड़न रोग इत्यादि बीमारियों की रोकथाम के लिए नवीनतम तकनीकों की जानकारियों पर प्रकाश डाला। साथ ही जैविक रोग प्रबंधन पर अधिक बल दिया। सह. प्रो. नंदकुमार ने राई सरसों के तेल के मुख्य महत्व एवं उसकी गुणवत्ता और उपयोग तथा लाभ के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सरसों का तेल हृदय रोगियों के लिए लाभकारी सिद्ध हुआ है। इस अवसर पर कार्यक्रम संयोजक डॉ महक सिंह ने राई सरसों की विश्वविद्यालय द्वारा विकसित नवीनतम प्रजातियों के बारे में प्रसार कार्यकर्ताओं को विस्तृत से जानकारी दी। डॉ वीके सिंह एवं डॉ राजवीर सिंह ने प्रतिभाग कर रहे सभी प्रसार कार्यकर्ताओं को विश्वविद्यालय के तिलहन शोध प्रक्षेत्र पर भ्रमण कराया।

छात्रों को फसलों के बारे में जानकारी देते वैज्ञानिक।

र नगर

न धारक ईट, ईट
एम0एम0 ह्यूम
ले निम्न कार्यों के